भय-रहित स्कूली माहौल का निर्माण | एक कक्षा का विवरण

अनिल एस. अंगडिकि

"स्कूल का माहौल ठीक है, और आप हमारे बच्चे का ध्यान हमसे भी ज़्यादा रख रहे हैं, लेकिन विद्यार्थियों को नियंत्रण में रखने की ज़रूरत है, वरना वे किसी की भी बात नहीं मानेंगे।"

"चूँकि आप बच्चों को सज़ा नहीं देते हैं, इसलिए मेरे बच्चे ने मुझे पलटकर जवाब देना शुरू कर दिया है। यह नहीं होना चाहिए।"

"अगर कक्षा में आपका अपने विद्यार्थियों पर नियंत्रण ही नहीं होगा तो आप उन्हें कैसे पढ़ा पाएँगे?"

"यह स्कूल में विद्यार्थियों को पढ़ाने का सही तरीक़ा नहीं है, हमने ऐसा पहले कभी नहीं देखा है; इससे वे बिगड़ सकते हैं।"

जब भी हम बच्चों के अभिभावकों से अभिभावक-शिक्षक बैठकों में या उनके घर जाकर मिलते, उनसे इसी तरह के कई और अवलोकन व सुझाव सुनने को मिलते। ये बातें स्कूल से जुड़े दूसरे हितधारकों की तरफ़ से भी सुनने को मिलती थीं जो अज़ीम प्रेमजी स्कूल, यादगिर (2012 में देश भर में शुरू हुए छह अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में से एक) की स्थापना के शुरुआती वर्षों में हमारे स्कूली बच्चों से मिलने आते थे। उस समय एक गोदाम में कुछ बदलाव करवाकर वहीं कक्षाएँ शुरू की गई थीं क्योंकि स्कूल का स्थायी परिसर तब बनकर तैयार हो रहा था।

विद्यार्थियों के लिए मानसिक प्रताड़ना, पिटाई या भेदभाव से दूर एक भय-रहित माहौल का निर्माण करते हुए हमने लगातार लोगों से उसी तरह की बातें व प्रतिक्रियाएँ सुनीं जिनका ज़िक्र ऊपर किया गया है।

2012 में, पहली कक्षा में 32 विद्यार्थियों का नामांकन हुआ। ये सभी बच्चे आस-पास के गाँवों से ही थे और इनमें से ज़्यादातर बच्चे स्कूल जाने वाली पहली पीढ़ी के थे। हम अपनी स्कूल की नीति और दिशा-निर्देशों के साथ काम कर रहे थे। इनमें अधिकांशतः ऐसे घटक थे जो निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम या शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई) 2009, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर आधारित थे। हमारे पास अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के फ़ील्ड संस्थानों के सन्दर्भ व्यक्तियों और नेतृत्व करने वालों की एक टीम थी जिनके पास वैकल्पिक स्कूलों, ग़ैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) या सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में काम करने के अनुभव थे। इन सभी लोगों ने स्कूल में एक ऐसी विचारधारा को स्थापित करने को लेकर हमारा क्षमतावर्धन करने, हमें अभ्यास और अनुभव दिलाने में हमारी मदद की। यह विचारधारा इस सिद्धान्त पर आधारित थी कि *कोई भी बच्चा बिना किसी चिन्ता या डर के, अच्छे सम्बन्धों के साथ, और योगदान/भागीदारी के मिलने वाले समान अवसरों के साथ अपना आत्मविश्वास बढ़ा पाएगा और सीखने व अभिव्यक्त करने में सक्षम हो सकेगा।* यह हासिल करना हम सबके लिए बेहद ज़रूरी था, ताकि हम इस तरह का माहौल बनाने की सम्भावनाओं और बच्चों के सीखने पर पड़ने वाले इसके सकारात्मक असर को सामने ला पाएँ।

हमारी चुनौतियाँ

हमारी मुख्य समस्याएँ कुछ ऐसी थीं :

- हम शिक्षकों ने अभी तक ऐसी औपचारिक व्यवस्थाओं वाले स्कूलों में पढ़ाया था जहाँ अमूमन यह माना जाता था कि सज़ा देने से बच्चों को सिखाने और ज़िम्मेदार व्यक्ति बनाने में मदद मिलती है।
- जिन अभिभावकों के लिए 'भय-रहित' स्कूली माहौल एक नई चीज़ थी, वे इसके बिलकुल ख़िलाफ़ थे।
- जो बच्चे स्कूल जाने की तैयारी के बग़ैर हमारे स्कूल में आ गए थे, उन्होंने शिक्षकों के उन सभी प्रयासों को काफ़ी मुश्किल बना दिया था जिनमें वे झगड़ों को सुलझाने या निर्देशों का पालन करने के लिए बातचीत का रास्ता अपना रहे थे।

हमें अपने विचारों पर अड़े रहने की ज़रूरत थी ताकि हम अपनी मान्यताओं और काम से बदलाव ला सकें।

सीखने का तनाव मुक्त माहौल बनाने के लिए हमने एक ऐसी व्यवस्था बनाई जिसमें बच्चे अपनी इच्छा के मुताबिक़ कक्षा में आ सकें। शुरुआत में, हम जब उन्हें कक्षा में बुलाते तो उनमें से ज़्यादातर बच्चे बाहर ही रहते। वे खेलते रहते, परिसर में घूमते या अकेले बैठे रहते। इसके चलते, हमारे सामने कई नई समस्याएँ उभरकर आईं। कुछ बच्चे अपने गाँव वापस जाने के लिए स्कूल की दीवार फाँदकर उससे लगे खेतों में भाग

निकलते। हमें उनके पीछे भागकर उन्हें वापस लाना पड़ता। हमारे सामने ऐसे मामले भी आए जिनमें कुछ बच्चे आक्रामक हो गए और गालियों का इस्तेमाल करने लगे। जिस धैर्य के साथ और जिस तरह शिक्षकों ने उनके इस तरह के व्यवहार पर प्रतिक्रिया दी वह बच्चों के इस तरह के व्यवहार करने पर घर में होने वाली प्रतिक्रियाओं से बिलकुल उलट थी। इसने बच्चों के बीच सकारात्मक भाव को विकसित करने में एक अहम भूमिका निभाई।

ऐसी किसी भी समस्या के सामने आने पर हमने बच्चों से समूहों में और व्यक्तिगत रूप से नियमित संवाद शुरू किए। हमने उन्हें यह सिखाना शुरू किया कि दूसरों से किस तरह बात करें, और झगड़ों को कैसे सुलझाएँ। ख़ासतौर पर उन्हें गालियों का इस्तेमाल करने से बचना सिखाया गया। छोटे समूहों में लैपटॉप पर फ़िल्में दिखाने जैसी कुछ दूसरी गतिविधियाँ, और रोल प्ले व कहानी सुनाने जैसी कुछ इनडोर गतिविधियाँ करने से हमें विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध बनाने में मदद मिलने लगी। इससे अब वे कक्षा में ज़्यादा समय बिताने लगे। एक या दो बच्चों को छोड़कर, धीरे-धीरे लगभग सभी बच्चे समय से कक्षा में आने लगे और कक्षा गतिविधियों में शामिल भी होने लगे।

बच्चों को जोड़ना

हमने विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़ना शुरू किया, जैसे हाव-भाव के साथ कविताएँ करना; कक्षा की शुरुआत में कहानी सुनाना और ड्रॉइंग, पेंटिंग व मिट्टी से कुछ बनाने जैसी कला गतिविधियाँ करना; और छोटी फ़िल्में या वीडियो दिखाना। इन गतिविधियों में सभी बच्चों को मज़ा आता था। बाहर की गतिविधियों में प्रकृति की सैर शामिल होती थी। इस दौरान बच्चे परिसर के आस-पास घूमते, अवलोकन व चर्चा करते, बागवानी करते, समूह वाले खेल खेलते, और उन खेलों के नियम भी बनाते। इसके अलावा, भाषा और गणितीय अवधारणाओं के लिए बच्चों और शिक्षकों, दोनों के द्वारा मिलकर तैयार किए गए अलग-अलग तरह के डिस्प्ले से भी सीखने में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद मिली।

पाठ्यचर्या से जुड़ी होने के साथ-साथ, इन सभी गतिविधियों ने उनमें मिल-जुलकर खेलने, काम करने और एक-दूसरे को सहयोग व मदद करने जैसे बुनियादी मूल्यों के विकास में भी योगदान दिया। कक्षा और असेम्बली में बातचीत व चर्चाओं के दौरान दिए गए उदाहरणों ने बच्चों को सकारात्मक व्यवहार का महत्त्व समझाने में मदद की। उदाहरण के लिए, सुबह की असेम्बली के एक हिस्से में बच्चों के बैठने की व्यवस्था की गई जहाँ बैठकर वे गतिविधियाँ करते या उनको होते देखते, स्कूल सम्बन्धी मसलों पर चर्चा करते और अपने अनुभव भी साझा करते। इससे वे स्कूल की आगे की दिनचर्या के लिए तैयार होते।

कक्षा व दोपहर के खाने के दौरान, शिक्षक बच्चों के साथ ही बैठा करते; स्कूल परिसर की साफ़-सफ़ाई के लिए सब मिलकर काम करते; और स्कूल की बाक़ी सभी गतिविधियों में सोच-समझकर सबके लिए एक जैसा माहौल रखा गया, ताकि किसी भी तरह की ग़ैर-बराबरी और भेदभाव न हो सके। इस तरह की ज़्यादातर गतिविधियों और कामों ने बच्चों और शिक्षकों के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित किए। बच्चे

चित्र-1 : *एक कक्षा में फ़िल्म का प्रदर्शन।*

कक्षाओं में अपने विचार और नज़रिए व्यक्त करने लगे, यहाँ तक कि वे उनके परिवार की समस्याओं जैसी निजी जीवन की बातें भी साझा करने लगे।

कार्यविधियाँ बनाना

धीरे-धीरे, हमने बच्चों के साथ चर्चाएँ करके कक्षा व स्कूल के लिए नियम बनाने शुरू किए। मसलन, बैठने की व्यवस्था, चीज़ों को सफ़ाई के साथ उनकी निर्धारित जगह पर रखना, कचरे के लिए कूड़ेदान का इस्तेमाल करना, शौचालय को साफ़ रखना, अपनी बारी आने पर बोलना, किसी को भी मारना या गाली नहीं देना, खाने को बर्बाद नहीं करना आदि। शुरुआत में, कुछ बुनियादी और आसानी से माने जा सकने वाले नियम ही बनाए गए, और उनको कक्षा के बाहर व भीतर प्रदर्शित किया गया। जब भी कोई झगड़ा या विवाद होता तो बातचीत के दौरान इन नियमों को याद दिलाया जाता।

हम सभी शिक्षकों की नियमित टीम बैठकें हुआ करती थीं। इनमें हमारे अनुभवों, चुनौतियों और उनके सम्भावित समाधानों पर चर्चा की जाती थी। शिक्षा के सन्दर्भ से जुड़ी कई पुस्तकें हम समूहों में पढ़ते और उन पर चर्चा करते। ऐसी कुछ किताबें थीं – गिजुभाई बधेका की *दिवास्वप्न*, तेत्सुको कुरोयानागी की *तोत्तो चान : द लिटिल गर्ल एट द विंडो*, हेमराज भट्ट की *द डायरी ऑफ़ ए स्कूल टीचर*, ए. एस. नील की *समरहिल* आदि। कक्षा में बच्चों की भागीदारी बढ़ाने, कक्षा को बेहतर ढंग से सम्हालने, और एक बाल-केन्द्रित प्रक्रिया स्थापित करने के लिए अच्छे पहलुओं, ख़ासतौर पर शिक्षणविधि सम्बन्धी, को समझने हेतु हमने एक-दूसरे की कक्षाओं का अवलोकन करना और अपनी ख़ुद की कक्षाओं की रिकॉर्डिंग करना शुरू कर दिया। इसके साथ ही, अभिभावकों के साथ नियमित बैठकों की मदद से हम लगातार उनके साथ अपने पढ़ाने के तरीक़े और घर पर बतौर अभिभावक उनकी ज़िम्मेदारियों पर बातचीत करते रहते थे।

ये सभी प्रक्रियाएँ पूरे शैक्षिक वर्ष जारी रहीं, और इन्होंने स्कूल की संस्कृति को गढ़ने में मदद की। जब दूसरे सत्र के बच्चों ने स्कूल में दाख़िला लिया तो हम सभी काफ़ी हैरान थे। शिक्षकों के ज़्यादा प्रयासों के बिना ही बच्चे कक्षा में आकर बैठ रहे थे और सक्रिय रूप से गतिविधियों में शामिल हो रहे थे। इसका श्रेय हमने पुराने सत्र के बच्चों को दिया जिनको देखकर नए बच्चों ने यह सब सीखा। इससे स्कूल में एक भय-रहित संस्कृति के निर्माण की सम्भावना के बारे में हमारी मान्यता व विश्वास और भी मज़बूत हुआ।

'ज़िम्मेदारी के साथ आज़ादी'

बच्चों को ज़िम्मेदार बनाने के लिए, हमने स्कूल के दैनन्दिन के कार्यक्रमों के संचालन के लिए समितियों के गठन जैसी कुछ लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की नींव रखी। स्कूल का प्रत्येक बच्चा इनमें से किसी एक समिति का सदस्य बना और अलग-अलग कामों में शामिल हुआ। ये काम थे – निर्णय लेना, सभी को सूचित रखना, क्रियान्वयन करना, और मनोभावों को सम्हालने जैसे जीवन कौशलों पर काम करने के साथ ही स्कूल महासभा जैसे मंचों के माध्यम से समस्याओं के समाधान ढूँढ़ना। बच्चों को अभिव्यक्ति की जगह देने, कार्यक्रमों को सार्थक ढंग से रचने, और कक्षा के भीतर व बाहर तरह-तरह की गतिविधियाँ आयोजित करने से हमें अपनी स्कूल की सोसाइटी बनाने में काफ़ी मदद मिली।

समरहिल में ए. एस. नील के उदाहरण की ही तरह, विभिन्न स्कूलों के अनुभवों से हमने यह आकलन किया कि उनकी कौन-सी सीखों को किस तरह से हम अपने परिवेश में ढाल सकते हैं। इससे वह बात सामने आई जिसे हम 'ज़िम्मेदारी के साथ आज़ादी' कहते हैं। यानी, बतौर शिक्षक (जिसमें प्राचार्य भी शामिल हैं) हमारी जवाबदेही सिर्फ़ प्रक्रियाएँ स्थापित करने तक ही नहीं है, बल्कि ये प्रक्रियाएँ बच्चों में ज़िम्मेदारी का जो भाव पैदा करेंगी उसके लिए भी हम जवाबदेह हैं। हमने कमेटी की बैठकों में अपने हस्तक्षेपों की समीक्षा की और उन पर चर्चा की। हमने ख़ुद से कुछ सवाल पूछे। जैसे एक शिक्षक के नाते मुझे कब अपनी राय देनी चाहिए? स्कूल के कामकाज के बारे में कमेटी जो निर्णय लेती है वे मेरे सुझावों से कितने प्रभावित होने चाहिए?

चित्र-2 : *कक्षा के बाहर की गतिविधियों का आनन्द लेते हुए विद्यार्थी।*

स्कूल में मिलने वाली देखभाल और भय-रहित माहौल से सभी बच्चे और उनके अभिभावक ख़ुश हैं और स्कूल में बच्चों का नामांकन काफ़ी बढ़ा है। इस संस्कृति को बनाने की यात्रा में, कुछ शिक्षक ऐसे भी रहे जो हमारी विचारधारा से सहमत नहीं थे। ऐसे शिक्षक या तो ख़ुद ही छोड़कर चले गए, या उन्हें छोड़ने के लिए कह दिया गया। इससे स्कूल से जुड़े सभी हितधारकों को अपने साझा लक्ष्य को हासिल करने के लिए मज़बूती से लगे रहने में मदद मिली। हमारे बच्चों की उनके अच्छे व्यवहार और आत्मविश्वास से भरी बॉडी लैंग्वेज के लिए बाहर के लोगों, ख़ासकर दूसरे ज़िलों के सरकारी स्कूलों के शिक्षकों, द्वारा तारीफ़ की जाती है। इस तरह की सराहना और फ़ीडबैक हमें इस दिशा में और आगे बढ़ने के लिए व किसी भी तरह की मौजूदा कमी को समझने और उसे दूर करने के लिए प्रेरित करती है।

चित्र-3 : *कक्षा के बाहर की गतिविधियों ने सीखने में बच्चों की दिलचस्पी को बनाए रखा।*

चित्र-4 : *बच्चों के स्कूल के काम को उनके अभिभावकों के साथ साझा किया जा रहा है।*

चित्र-5 : *बच्चे धीरे-धीरे स्कूल की दिनचर्या के आदी हो गए।*

अनिल एस. अंगडिकि 2012 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन से जुड़े हैं और फ़िलहाल यादगिर, कर्नाटक के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में काम कर रहे हैं। फ़ाउंडेशन से जुड़ने से पहले वह कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं को रसायनशास्त्र पढ़ाते थे। उनसे anil.angadiki@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : शिवम **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अतुल अग्रवाल